Teacher name:
SAFINA KOUSAR
Assistant Professor

Department name: Home Science Department

All Hafeez College Ara.

B.A Undergraduate (U.G)
part III
paper V

Topic : रेशे और उसके आवश्यक गुण ।

Scanned with CamScanner

Topic : रेशे और उसके आवश्यक गुण।

Introduction :

प्रारंभ में आदिमानव को शरीर ढकने के लिए पेड़ों की छाल तथा पत्तों का प्रयोग किया करते थे। आहार की खोज में वह पशुओं का शिकार करते थे। इन पशुओं के खाल को खाल का शरीर के ढकने का रूप में प्रयोग करने लगा उसके बाद पक्षियों के घोसले बनाने तथा बेलों एवं लता-ओं के आपस में गुथे जाने से मानव को तिनकों और टहनियों से बटकर और गुथकर रस्सीयों, चटाईयों इत्यादि बनाने की प्रेरणा मिली है।

वस्त्रों के निर्माण के प्रेरणा मानव में प्रकृति से ही मिले चटाई, रस्सी, टोकरी, टडीयाँ आदि पेड़-पौधों से ही आदि प्राप्त कोमल रेशों को बाँटकर डोरा एवं धागा बनाते समय उस वस्त्र रूप में भी बुनने की कला का प्रेरणा मिली है। पशुओं की त्वचा, पत्ते तथा छाल आदि शरीर को ढँकने के लिए प्रयोग किये जाते थे। लेकिन ये कड़े, खड़े एवं खुरदरे होते थे। ये सब शरीर रूपी क्रियाओं जैसे :— मुड़ने, झुकने तथा चलने आदि में बाधा पहुँचाते थे इस तरह कोमल रेशों से बुन कर तैयार किये गये वस्त्र के लिए सुविधाजनक सिद्ध हुई है।

वैसे तो प्राकृति में अनेक प्रकार के रेशे मिलते हैं। परंतु वस्त्र बनाने के लिए जिन रेशों का प्रयोग होता है। उनमें कुछ विशेष गुणों का होना आवश्यक है। रेशों वस्त्र निर्माण के लिए

Scanned with CamScanner

प्रयोग किये जा सकते है या नही यह बात उनके रसायनिक एवं भौतिक गुणो पर निर्भर करता है। इस प्रकार रेशो के अपने गुणो के महत्व का सहज अनुमान लगाया जा सकता है जो इस प्रकार है।

1. (दृढ़ता) **Strength** :→ वस्त्रो के निर्माण में रेशे ही काम में आते है। ये रेशे मजबूत हो, मजबूत रेशो से बने वस्त्र टिकाऊ होते है और वस्त्र आसानी से तैयार किये जा सकते है। क्योंकि रेशे को बांटते समय काफी खींचाव का सामना करना पड़ता है। ~~क्योंकि रेशो को बांटते स~~ इसलिए जिन रेशो में खिंचाव सहने की शक्ति होती है वे वस्त्रो के निर्माण के लिए उपयोगी सीद्ध होती है।

2. **पटयेख्या** :→ रेशों को आपस मे सटाकर लम्बे धागे बनाये जाते है। इस प्रक्रिया मे इन्हे रोमिट्यास से खीचकर लम्बा करके तथा बटाई करके तैयार किये जाते है। कटाई तथा बटाई के समय इनपर अत्यधिक खिचाव कर तनाव को सहना पड़ता है। इसलिए रेशो मे प्रसारिक (फैलने या सिकुड़ने) होने के गुण होना चाहिए।

3. **लचीलापन** :→ प्रत्यास्था के समान ही रेशो मे लचीलापन होने का भी गुण होना चाहिए। इन गुण के होने से रेशो को कताई - बटाई तथा बुनाई के समय खिंचाव एवं तनाव तथा झटको को सहने की क्षमता हो। लचीलापन रहने से रेशो मे मुड़ने, बिम पर चढ़ने, लपेटने आदि कि क्रियाओ को बिना टूटे हुए करने की क्षमता आती है। अगर जीन रेशो मे इन गुणो का अभाव रहता है उनके बार - बार टूटने का डर रहता है। लचीलापन लिये हुए रेशो का धागा

तथा वस्त्र बनाना आसान हो जाता है।

4 अन्यस्यता :→ प्रत्यास्था तथा लचीलापन के समान ही अन्यस्यता का रेशों में रहना चाहिए। इससे उन्हें काटना - बुनना तथा वस्त्रो के रूप में बुनना आसान होता है। धागो के फ्रेम पर चढ़ाते समय कई बार ऊँचा - नीचा करना पड़ता है। ऐसे रेशो के गुण होने से धागो को तन को और झुकाने, मोड़ने एवं घुमाने एवं ऊँचा उठाने एवं नीचा झुकाने पर बीना टूटे स्थिर रहते है। ऐसे रेशो से बने वस्त्र अच्छे होते है।

5 अवशोषकता :→ नमी और आद्रता को अवशोषित करने का गुण रेशो मे होने चाहिए इसके कई कारण है वस्त्र हमेशा गंदे होते रहते है इस कारण इन्हें प्रतिदिन धोना पड़ता है। रेशों मे नमी को सोखने के गुण से वस्त्रो की सफाई सहज से हो जाती है और ऐसे वस्त्र स्वास्थ्य के दृष्टि से अच्छे माने जाते है। नमी ग्रहण करने के तथा नमी मुक्त होने का गुण होना आवश्यक माना जाता है और दूसरी बात यह है कि हमारे शरीर पर जाने अंजाने हमेशा पसीना नीकलते रहता है। नमी के गुण वाले वस्त्र शीघ्रता से पसीना सोख लेते है और त्वचा को स्वच्छ और शीतलता प्रदान करते है। इन गुणों से युक्त बने रेशों के वस्त्र आरामदायक होते है।

6 गरम या विद्युतया सम्वाहिता :→ जिन रेशो मे ताप को सहने की क्षमता हो उन रेशो से बने वस्त्र अच्छे माने जाते है। आज के आधुनिक युग मे अनेक तरह के रेशो के अविष्कार हुआ इन रेशों से बने वस्त्र की

क्षमता कम रहती है लेकिन कुछ रेशे ऐसी होती है जिससे ताप को सहने की क्षमता होती है। उच्च सम्वहता वाले वस्त्रों का उपयोग आज के समय में अधिक होने लगा है।

7 आपस में सटने की क्षमता :→ रेशों में आपस सटने के गुण हो तो ऐसे वस्त्र अधिक उपयोगी होते है। रेशे अपने प्राकृतिक अवस्था में अत्यन्त छोटे एवं सुक्ष्म होते है इन्हें एक दूसरे के ऊपर तथा पास में रखकर कताई की क्रिया द्वारा अविरल लम्बा धागा तैयार किया जाता है। कताई कि क्रिया तभी संभव हो सकती है जब रेशो में एक दूसरे से सटने के गुण हो। सुक्ष्म रेशा जितना आपस में जल्दी से सटेंगे उतना ही अधिक धागा बनेगा और उत्पादन बढ़ेगा। आपस में सटने का यह गुण कपास के रेशे में होता है। लीलन के रेशों की सतह खरदरी और गाठें के कारण उतना लम्बा बनाना संभव नहीं हो सकता है।

8 कोमलता :→ कोमल रेशों से बने वस्त्र मुलायम होते है जिस कारण लोगों द्वारा अधिक पसन्द किये जाते है। परिधान के लिए वस्त्र कोमलता ही होने चाहिए। पहनने तथा लोट पोछने के लिए वस्त्र मुलायम लिये हुए गुण के होना चाहिए। कोमलता के अतिरिक्त रेशों में बारीकी भी जरूरी है। क्योंकि मोटे रेशों से बने वस्त्र मोटे होते है। एवं खुरदुरे होते है। बारीक रेशे से बने वस्त्र बारीक एवं मुलायम होते है। ऐसे वस्त्र देखने में सुन्दर तथा स्पर्श में सुखद लगते है।

9 किड़े-मकोड़े से बचाव :→ रेशों में किड़े ना लगे ऐसे रेशा से बने वस्त्र अच्छे माने जाते है।

जिन रेशों में कीड़े लग जाते है वे टिकाऊ नही होते है और जल्दी खराब हो जाते है। इसलिए रेशों में कीड़ो से बचने की क्षमता होनी चाहिए।

10 धोने एवं शोधक पदार्थों के अनुरूप — वस्त्र दैनिक जीवन मे प्रयोग होते है इसलिए इन्हे स्वच्छ होना जरूरी है। वस्त्रो पर दाग - धब्बे पड़ जाते है जिन्हे छुड़ाने के लिए रसायनिकों का प्रयोग किया जाता है। ऐसे शोधक पदार्थ कई प्रकार के होते है। कुछ क्षारियों भी होते है। कुछ अम्लियों भी होते है कुछ कोमल प्रकृति के होते है। इसलिए रेशों के अनुकूल शोधक पदार्थों का प्रतिक्रिया होना आवश्यक है। स्वच्छता के लिए शोधक पदार्थ भी आवश्यक है। जिससे वस्त्र आसानी से साफ किया जा सके तथा उस वस्त्र की विशेषता निखर कर सामने आये।

Thank you.

2020/4/28
Tuesday.